।। ओ३म्।।

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 22 अंक 02

जून - 2024

(सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,123

विक्रम संवत् 2081

दयानन्दाब्द 199

सलाहकार मण्डल

श्री ललित नागर

पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री प्रकाश आर्य

कार्यालय फोन : 0755-4220549

सम्पादक

अतुल वर्मा

फोन : 07324-226566

सह सम्पादक

श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता

एक प्रति .... ₹ 20,00

वार्षिक .... ₹ 300,00

आजीवन .... ₹ 2000,00

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 .... ₹ 500

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) .... ₹ 400

आधा पृष्ठ (अन्दर का) .... ₹ 250

चौथाई पृष्ठ .... ₹ 150

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय 04
- यज्ञ से पर्यावरण संतुलित होता है 07
- इन्द्रियों को वश में करने की विधि 09
- पाप से हो दूर 10
- वो सुबह कभी तो आयेगी 11
- वेद ही सब सत्य विद्याओं के भण्डार क्यों ? 12
- नारियों के अधिकार व कर्त्तव्य 15
- उन्नति के लिए आवश्यक चिन्तन 17
- सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें ? 19
- कर्मफल सिद्धांत 20
- समाचार 22

सम्पादकीय :

धार्मिक आयोजनों में हुआ व्यवसायीकरण और मनोरंजन

अध्यात्म मनुष्य की शोभा हैं, अध्यात्म मनुष्य जीवन के सौन्दर्य का आधार हैं। मनुष्यता की पहचान ही धर्म से है, बिना धर्म के कहा गया **''धर्मेण हीना पशुभिः समाना''** धर्म के बिना मनुष्य पशु समान हैं।

ऐसा क्यों कहा इस पर विचार करना चाहिए। धर्म को समझे बिना मानना, धर्म के लाभ से दूर रहना हैं। बिना जाने मानना औपचारिकता का निर्वाह करना मात्र हैं। धर्म समस्त मानव जाति का संविधान है जिसका पालन करना प्रत्येक के लिए अनिवार्य हैं। जिस प्रकार किसी राष्ट्र का संविधान उसके नागरिकों को उनके अधिकार और कर्तव्य बोध कराता है जिसे पालने हेतु प्रत्येक नागरिक बाध्य हैं। ठीक इसी प्रकार ईश्वर द्वारा श्रृष्टि के प्रारम्भ में दिया गया धर्म भी एक मानवीय संविधान है जो मनुष्य को अपने कर्तव्यों का पालन करने और अधिकारों की सीमा का निर्धारण करता हैं। धर्म ही मनुष्य को पतन के मार्ग पर जाने से रोकता है श्लोक में कहा गया जो धर्म को आत्मसात करता है धर्म उसकी रक्षा करता है जो धर्म को त्याग देता है मार देता है धर्म भी उसे मार देता है कहा गया

धर्म एव हतो हन्ती हः धर्मो रक्षति रक्षितः।

तस्माद धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीत्।।

अर्थात धर्म की रक्षा करने से क्या तात्पर्य है इसे समझना आवश्यक हैं। धर्म कोई वस्तु या व्यक्ति अथवा भौतिक पदार्थ नहीं है जिससे रक्षा के लिए किसी प्रकार साधनों से रक्षा की जावें।

यहां रक्षा करने से तात्पर्य धर्म को ग्रहण करना। धर्म को ग्रहण करने का अर्थ है धर्म के लक्षण धर्म के उपदेशउसके संदेश को जीवन में धारण करना। धर्म की परिभाषा से भी स्पष्ट है धर्म क्या है ? **धारणात् धर्म इत्याहुः'' अर्थात जो धारण किया जावे वह धर्म हैं। धर्म के लक्षण है ''धैर्यता, क्षमा, मन, पर निमन्त्रण चोरी न करना, आन्तरिक व बाहरी पवित्रता, इन्द्रयों पर, उत्तम बुद्धि सत्य विद्या, सत्याचरण अक्रोध क्रोध न करना एवं अंहिसा जैसे गुण धर्म के लक्षण हैं।**

इनको जीवन में धारण करना ही धर्म का पालन करना कहलाता हैं इन बातों को हमारे पूर्वजों ने, ऋषि मुनी, विद्वान धर्म प्रचारको ने बताया हैं। जो सत्य सनातन वैदिक धर्म के गुणो का रहस्यो का मानव कल्याण के लिए निःस्वार्थ भाव से उपदेश करते थे। जिन्हें श्रवण कर समाज दुर्गुणों, दुर्व्यसनो, दुराचार से दूर रह कर कल्याणकारी गुणकर्म स्वभाव का ज्ञान प्राप्त करता था। धार्मिक आयोजनों में मानव उत्थान की चर्चा होती थी, मनुष्य जीवन किस प्रकार सफल हो, किस प्रकार कर्मो को करते हुए मनुष्य इस लोक और परलोक की सिद्धी कर सकता है, इस जन्म को सफल बनाने के कौन से मार्ग हैं। इस प्रकार की ज्ञानमय चर्चा होती थी।

इसका परिणाम था समाज सुख, शान्ती, निर्भयता का जीवन जीते हुए परोपकारी था। परिवारिक और सामाजिक जीवन में परस्पर मिठास और मर्यादा रहती थी। धर्म पालन का ही परिणाम था व्यक्ति संतोषी था चिन्ता और भय का कोई कारण नहीं था। क्योंकि धर्म सुख, शान्ती, समृद्धि निर्भयता सहयोग संगठन त्याग को बढाता हैं।

व्यक्ति के पास साधन कम थे किन्तु सुखी था, मकान भले ही कच्चे थे, पर आत्म विश्वास के पक्के थे, सम्बन्धो में मिठास थी, समर्पण था, विश्वास था कर्तव्यों का निर्वाह करते थे। यह सब इसलिए था क्योकि वे धर्म का आचरण करते थे।

आज धर्म का प्रचार पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गया है आज से धर्म 40 से 50 वर्ष पूर्व इतने बड़े बड़े आयोजन धर्म के नाम पर नहीं होते थे। पहले इतने कथावाचक, भजन गायक अनेक सन्त, पंड़ित, लाखों की भीड़ भी नहीं होती थी जितनी आज कल हो रही हैं। नए नए मठ मंदिर पूजा स्थल बन रहे हैं यात्राएं निकल रही हैं। बड़ी बड़ी भागवत कथाएं, लाखों की लागत के शामियाने भोजन प्रसादी, लंगर भंडारे शहर ग्राम मोहल्लों में आयोजित हो रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है पूरा समाज धर्म का अनुयायी हो गया।

परन्तु एक नजर इस पर भी डालों 50 साल पहले जब धर्म का इतना प्रचार नहीं था जितना अब देखने में आ रहा हैं। उस समय का व्यक्ति अधिक सुखी था या आज का ? उस समय के व्यक्ति पर अधिक विश्वास किया जाता था या आज के ? उस समय के व्यक्ति की चिन्ता परेशानिया कम थी या आज की ? उस समय समाज में हिंसा अपराध अव्यवस्था अधिक थी, या आज हो रही है ? पहले का व्यक्ति सत्य के निकट अधिक था या आज का ? पहले के रिश्तों में सम्बन्धों में आपसी प्रेम अधिक था या आज अधिक हैं ?

निश्चित रूप से आपकी मान्यता यही होगी कि पहले की अपेक्षा वर्तमान समय में दुःख क्लेश, चिन्ता, हिंसा, अराजकता, अव्यवस्था बेइमानी बढ़ी है बढ़ती जा रही हैं। विचार

करें जब धर्म इतना अधिक व्याप्त हो रहा है करोड़ो करोड़ो भक्त बढ़ रहे है फिर ये दुराचार पाप कर्म क्यों बढ़ रहे हैं ? जबकि धर्म से तो सुख शान्ती संगठन निर्भयता अंहिसा सत्याचरण की वृद्धि होनी चाहिए।

इसका कारण है पहले धर्म के मर्म को समझाया जाता था जिसे समाज जीवन में धारण करके सुख शान्ती संतोषी रहता था। अब धर्म के नाम पर कहानी, किस्से गीत, संगीत, नृत्य, बढ़िया सजावट आकर्षण मंच, कथा वाचक लुभावने वस्त्र व सजधज कर कथा करते हैं। बार बार एक ही कहानी को नए नए ढंग से सुना कर जनता का मनोरंजन करने की कला प्रायः देखी जा सकती हैं। इस प्रकार धार्मिक आयोजन आज औपचारिकता और मनोरंजन के स्थान बनते जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रायः धर्म के नाम पर व्यवसाय बन गया है लाखों की पहले दक्षिणा का ठहराव होता है फिर कथा होती है।

इसके साथ ही बड़े बड़े आयोजन करवा कर कुछ व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने और धार्मिक होने का यह माध्यम बना रहे हैं। यह धर्म का पालन नहीं औपचारिकताए है कोई व्यक्ति बिमार हो तो वह डांक्टर से दवा लिखवाकर ले आता हैं। दवा लाता है दवा के पैकिंग परनाम तो वही लिखा जो डॉक्टर ने चिट्ठी में लिखा था किन्तु दवा में जो मिश्रण है वह सही नहीं है नकली दवा हैं। क्या ऐसी दवा जिस पर मात्र नाम सही है किन्तु उसके गुण नहीं है उसे खाने से मरीज ठीक हो जायेगा ? कभी नहीं हो सकता उल्टा उसका स्वास्थ बिगड़ जावेगा।

ठीक इसी प्रकार आज नाम तो धर्म का हो रहा है आयोजन भी धार्मिक कहे जा रहे है किन्तु उसमें जो परोसा जा रहा है वह धर्म की सत्य सनातन मान्यता के अनुसार नहीं हैं। मनोरंजन व्यवसाय और अपना वर्चस्व बढ़ाने की भावना और औपचारिकता से पूर्ण है इसलिए धर्म का लाभ जो होना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा हैं।

विशेष – धर्म की मान्यता का आधार आज बड़ी संख्या की भीड़, नकली सन्त, महात्मा, विद्वानों के लुभावने, आकर्षक संदेश जिसमें बिना कुछ परीश्रम के कंठी माला, तावीज, रूद्राक्ष पहनने से सब मिलने का झुठा प्रचार हैं। ऐसे करोड़ो भक्तों के स्वामी आज जेल में हैं। पाखंड अंधविश्वास से बचने के लिए आवश्यक है पहले धर्म को जाने फिर मानें अधिक जानकारी हेतु इस सम्बन्ध में जिज्ञासु इस नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं। मो.: 6261186451 9826655117

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून पर विशेष

यज्ञ से पर्यावरण संतुलित होता है

आज विज्ञान के क्षेत्रों में असाधारण प्रगति, देश के उपरान्त विभिन्न घातक रोगों के सरकारी दावे तथा देश में फैल रहे प्लेग, तपेदिक, कोढ़, स्वाइन फ्लू, कोरोना, वायरस आदिकी उपस्थिति से, निरन्तर प्रसार से विश्व सकते में हैं, दिनोदिन बढ़ता चला जा रहा है। इन रोगों के पीछे गन्दगी, गरीबी, आबादी, औधौगिकरण, वैभव विलासिता, अदूरदर्शी योजनाएँ व अव्यवहारिक नीतियां अपासी सामन्जस्य का अभाव व दृढ़ इच्छाशक्ति का न होना भी हैं। भारतीय ऋषि मुनियों के वैदिक चिन्तन पर आधारित यज्ञ मानव समुदाय के लिए महत्वपूर्ण उपाय है वेदों के परिपेक्ष में यह वैदिक संस्कृति व आयुर्वेद के प्राण हैं।

वेदों में यज्ञौ वै श्रेष्ठतमं कर्म कहा गया है अर्थात यज्ञ जीवन का श्रेष्ठतम कर्म है, यज्ञ को कर्मकाण्ड की परिधि के साथ वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में देखने की जरूरत हैं। विभिन्न रोगों की रोकथाम व शारीरिक मानसिक पर्यावरण विशुद्ध करने तथा मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिए यज्ञ थैरेपी या यज्ञ महत्वपूर्ण हैं। यज्ञ से प्रदूषण को अल्प करने तथा वायुमण्डल को आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने हेतु किया जाता है अपितु यज्ञ के इस रहस्य के साथ शारीरिक स्वास्थ व वातावरण में व्यापक रूप से व्याप्त विभिन्न प्रकार के वायरस बैक्टेरिया, फंगस, व शरीर के विभिन्न अंग – प्रत्यांगों में व्याप्त रोगों को निष्क्रीय करने की वैदिक दार्शनिक वैज्ञानिक प्रामाणिक विधा भी हैं।

शरीर को चलाने के लिए रस रक्त स्नायुविहीन नाड़िया होती है, इसको प्रभावित करने के लिए आधुनिक चिकित्सा में इन्जेक्शन जी इन्ट्रावेनस सब

कुटेनियस मस्कुलर आदि के द्वारा औषधि के माध्यम से चिकित्सा की जाती है व की जा रही हैं, परन्तु इससे भी कही सूक्ष्म वायु में मिश्रित हो कर शरीर में पहुंचाने वाली यदि कोई विधा है तो वह आयुर्वेदिक वैदिक यज्ञ थैरैपी ही है यज्ञ का वैज्ञानिक आधार भी यही है कि अग्नि अपने में जलाई गई ?

वस्तु को करोड़ों गुना अधिक सूक्ष्म बना देती है, प्रयोग के रूप में देखें तो एक लाल मिर्च अपने में उतनी तीखी नहीं होती, परन्तु अग्नि में डाल कर जलाया जाये तो उसका प्रभाव दूर दूर तक फैलता हैं। **फ्रांस के वैज्ञानिक डॉ हाफकिन व डॉ. कर्नल किंग ने अग्नि के सूक्ष्मीकरण सामर्थ्य सिद्धान्त के आधार पर प्रमाणित भी किया हैं।**

उन्होंने आग में घी जलाने व चावल केसर के धूएं से वातावरण की शुद्धता को प्रमुखता से प्रमाणित किया। यही यज्ञ थैरेपी का प्रारम्भिक स्वरूप हैं। आयुर्वेदिक यज्ञ से अग्नि में पदार्थ डालने पर स्थूल रूप सूक्ष्म रूप में परिवर्तित हो जाता हैं। व हो द्रव्यों को पमाणु रूप करके वायु व जल के साथ मिलकर शुद्ध करती है, अग्नि में डालने पर सैकड़ों लोगों को प्रभावित करती हैं। ग्राह्य के गैसीय व्यापनशील नियम के अनुसार निश्चित ताप व दाब पर गैसों की व्यापन गतियों उसके घनत्व के वर्गमूल के विपरीत अनुपाती होती है अर्थात गैस जितनी हल्की होगी, वह उतनी ही शीघ्रता से वायु में मिल सकेगी। इसी को अथर्ववेद में कहा है **स्वाहा कृतेउर्धवनम्रसं मारूतं गच्छतम** यज्ञ में स्वाहा पूर्वक आहुति देने से वायु आकाश में व्याप्त होती हैं। इसी सिद्धान्त के आधार पर अग्नि में व्याप्त होती हैं। इसी सिद्धान्त के आधार पर अग्नि में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म होकर दुर्धन्ध को दूर करता है व शरीर में प्रविष्ठ होकर विभिन्न जीवाणुओं से सुरक्षित रखना हैं।

महर्षि दयानन्द कहते है प्रत्येक मनुष्य परमात्मा की इस शुद्ध पवित्र श्रृष्टि को प्रातः से शाम तक अनेक प्रकार से दुषित करता है (यह पाप कर्म हैं) उसे कम से कम अपने द्वारा फैलाये प्रदूषण को नष्ट करने के लिए प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए। पहले घर-घर में यज्ञ ही देव पूजा का माध्यम था अब उसकी जगह दिपक, मोमबत्ती, विद्युत बल्ब से हो रहा है।

बोधकथा

इन्द्रियों को वश में करने की विधि

स्वामी रामतीर्थ जब प्रोफेसर तीर्थराम थे, तब लाहौर के एक कॉलेज में पढ़ाते थे। वह रहते थे लुहारी दरवाजा में। कॉलेज से घर को आ रहे थे, तो लुहारी दरवाजे में उन्होंने एक व्यक्ति को टोकरी में रखकर नींबू बेचते हुए देखा। पीले रंग के रसभरे नींबू थे। मुख में पानी आ गया। जिव्हा ने कहा – क्रय कर लो, उनका स्वाद बहुत उत्तम है।

तीर्थराम थोड़ी देर रूके। फिर आगे बढ़ गये। आगे जाकर जिव्हा फिर मचली, उसने कहा – नींबू अच्छे तो थे, नींबू खाने में हानि क्या है ?

तीर्थराम उल्टे आये। नींबुओं को देखा। वास्तव में बहुत उत्तम थे। उन्हें देखकर फिर घर की ओर चल पड़े। थोड़ी दूर गये तो जिव्हा फिर चिल्ला उठी – नींबू का रस तो बहुत अच्छा है। नींबू तो खाने की चीज है। उसे खाने में पाप क्या है ?

तीर्थराम पुनः नींबूवाले के पास आ गये। दो नींबू मोल ले लिये। घर पहुंचे। देवी से कहा – चाकू लाओ। उसने चाकू लाकर रख दिया। तीर्थराम चाकू को नींबू के पास और दोनों को अपने समक्ष रखकर बैठ गये। बैठे रहे, देखते रहे। अन्दर से आवाज आई, इन्हें काटो, काटने में क्या हानि है ?

रामतीर्थ ने चाकू उठाया और एक नींबू को काट दिया। मुख में पानी भर आया। अन्दर से फिर प्रेरणा हुई, इसे चखकर तो देखो, इसका रस बहुत उत्तम है।

रामतीर्थ ने एक टुकड़े को उठा लिया, जिव्हा के समीप ले गये। नींबू को उसके साथ लगने नहीं दिया। अन्दर से किसी ने पुकारकर कहा – तू क्या इस जिव्हा का दास है ? जो यह जिव्हा कहेगी, वही करेगा ? जिव्हा तेरी है, तू जिव्हा का नहीं।

समीप खड़ी पत्नि ने कहा – यह क्या करते हो ? नींबू को लाये, इसे काटा, अब खाते क्यों नहीं ?

जिव्हा ने कहा – शीघ्रता करो। नींबू का स्वाद बहुत उत्तम है। रामतीर्थ शीघ्रता से उठे। कटे और बिना कटे हुए दोनों नींबुओं को उठाकर गली में फैंक दिया और प्रसन्नता से नाच बैठे – मैं जीत गया।

यह है इन्द्रियों को वश में करने की विधि। (किसी वस्तु की उपलब्धता में त्याग इन्द्री विजय है)

वेद वाणी

पाप से हो दूर

ओ3म् परोपे हि मनस्पाप किसशस्तानि शंससि।
परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि संचर गृहेषु गोषु में मनः।।

– अर्थवेद

हे (मनस्पाप) मन के पाप तू (परा उप एहि) दूर भाग जा हे पापी मन। (किम्) क्यो (अशस्तानि) निन्दित बातों को (शंससि) सोचता है। (परेहि) हट जा। हे मन के पाप (त्वा) तुझको (न कामये) मै नहीं चाहता। (वृक्षान्+वनानि) वृक्षों और वनों में अर्थात निर्जन स्थानों में (संचर) विचरो (में) मेरा (मनः) मन तो (गृहेषुं) मेरे शरीर रूप घर की सफाई में विकारों से दूर करने में (गोषु) इन्द्रियों को सही दिशा की ओर उन्मुख करने में तथा वेद पठन पाठन में गौ संरक्षक व गौ संवर्द्धन में लगा है।

भावार्थ –मन मानव जीवन का आधार है, योगीराज श्रीकृष्ण कहते हैं – **"मन एव मनुस्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो"** मन ही मनुष्य के बन्धन का कारण है, मन ही मनुष्य के लिए मोक्ष का कारण है। मन का कपि बन्दर कहा गया है बहुत उछल कूद मचाता है मन के संकल्प विकल्प होते रहते है – इसमें उलझकर मनुष्य आकुल व्याकुल हो जाता है मन के विकार काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर, के वशीभूत होकर मनुष्य शनैः शनैः पतन के गर्त में जाने लगता है मन एक सीढी है जिससे ऊपर भी जा सकते है और उपर से नीचे भी आ सकते है। किन्तु साधना में रत साधक मन के पापों को कठोर शब्दों में कहता है।

मेरा तुझसे अब कोई सम्बन्ध नहीं है मैं तुझे नहीं चाहता। मैं अब समझ गया हूं – ये मन के विकार नरक के पथ है। मै तो अब दृढ संकल्प के साथ प्रभू का स्मरण करते हुए संयम विवेक की पतवारों से जीवन नौका खे रहा हूँ – योगासन प्राणायमादि से जीवन को प्रेय मार्ग से श्रेय मार्ग की ओर ले जा रहा हूँ। मै तो अपने शरीर की अर्न्तमन की सफाई में लगा हुआ हूँ। मै गौ अर्थात इन्द्रियों को सात्वीक और बलशाली बना रहा हूँ – वेदवाणी का जीवन में पठन पाठन और उसे जीवन में उतार रहा हूँ। गौ सर्वर्द्धन और गौ संरक्षण में जीवन आर्पित किए हुए हूँ। मन से बुरे विचारों को दूर कर रहा हूँ। हे मन के पाप भाग जा दूर हो जा। इस प्रकार की दृढ़ता आने से मन के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति हो और बन्धनों से मुक्ति हो सकती है।

वो सुबह कभी तो आयेगी

आकाश में सूरज चमकेगा, जब धरती मंगल गायेगी।
जब रिमझीम सावन बरसेगा, खेतों में बहारें आयेगी।
....वो सुबह कभी तो

जब पंछी डाल पर चहकेगें, और कोयल गान सुनायेगी,
कलियों पर भंवरे गुजेंगे, फूलों पर रंगत छायेगी।
....वो सुबह कभी तो

जब लाल पलास रंगायेगा, और सरसों पीली फूलेगी।
जब सर्द हवाए गुम होगी, तब ऋतु बसन्त लहरायेगी।
....वो सुबह कभी तो

जब आतंक की ऑधी बन्द होकर, खुशहाली प्यार बढ़ायेगी।
कश्मीर की वादी में फिर से, जब बुलबुल गीत सुनायेगी।
....वो सुबह कभी तो

औषध हिमगिरि पर महकेगा, निर्मल गंगा मुस्कुरायेगी।
परदेस में भूले मुसाफिर को, जब याद वतन की आयेगी।
....वो सुबह कभी तो

जब वेद ऋचाओं की स्वर लहरी, विश्व पटल पर छायेगी
जब विश्व गुरू होगा भारत, मॉ भारती तब हर्षायेगी
....वो सुबह कभी तो

—राधेश्याम गोयल ''श्याम''
कोदरिया, महू

बोधकथा

वेद ही सब सत्य विद्याओं के भण्डार क्यों

आइयें विचार करते हैं। आर्य समाज के संस्थापक, मानव समाज के उद्धारक, योगीराज महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन में वैदिक – अवैदिक लगभग 3500 ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन एवं गहन अनुसन्धान करने के पश्चात् यह घोषणा की थी, कि वेद ही सब सत्य विद्याओं के, ज्ञान विज्ञान के भण्डार हैं, निधि,हैं। वेद के अनुकूल चलकर ही मानव का कल्याण संभव है तभी राष्ट्र की उन्नति हो सकती है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर आर्य समाज द्वारा देश में अनेकों गुरूकुल विद्यालय संचालित किये जा रहे हैं। जिनके माध्यम से बालक बालिकाओं का चरित्र निर्माण, सनातन धर्म एवं संस्कृति की रक्षा की जा रही है।

वर्तमान समय में प्रमाद व भ्रम के कारण एक भूल हो रही है जिसे सुधारना अति आवश्यक है। हमने केवल संस्कृत भाषा को ही सीखने को वैदिक शिक्षा मान लिया है। आज हम संस्कृत भाषा मात्र सीखकर अथवा गीत गाना व बोलना सीखकर ही अपने आपको वेदों का विद्वान घोषित कर देते हैं। अपने नाम से बड़े–बड़े विज्ञापन प्रकाशित करवा कर,स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानकर इसी में सन्तोष कर लेते है, अपने आप को कृत–कृत्य मान लेते हैं। इसी बात को मुण्डकोपनिषद् में बड़े स्पष्ट शब्दों में बताया है।–

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः।

जङ्.घन्यमानाः परियन्ति मूढ़ा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

अर्थ–अविद्या के अन्धकार में पड़े हुए अपने आप को धीर विद्वान पण्डित समझने वाले आलसी पाप प्रवृत्ति के कारण दुःखों के मारे मूर्ख पुरूष, जैसे अन्धे के पीछे अन्धे चलते हैं वैसे भटकते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति जो वेद ज्ञान से शून्य हैं तथा वेद से विपरीत चलकर कुछ भी लाभ नहीं ले पाते।

आर्य जाति के महान दार्शनिक, वेदों के वैज्ञानिक भाष्य कर्त्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं वेदों में अंक गणित, बीज गणित, रेखा गणित, ज्योतिष है इसमें यजुर्वेद का अ0 18, मं0 ,24,25 उद्धृत करते हैं।'' इसे भी हमने वैदिक विधि से पढ़ना पढ़ाना छोड़ दिया है।

वर्तमान में वैदिक ज्योतिष गणित के विद्वान आचार्य दार्शनेय श्री लोकेश जी हैं जो नोएडा से वैदिक पंचाग प्रकाशित करते हैं अद्भुत पंचाग है अवश्य पढ़ें। दूसरे स्वामी ब्रह्मानन्द हैं। वेदों में विमान विद्या है महर्षि भारद्वाज रचित वृहद विमान शास्त्र जिसका कुछ भाग इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है राइट ब्रदर्स जिन्हें हम जानकारी न होने के कारण विमान विद्या का जनक मानते हैं, से 8 वर्ष पूर्व आर्य वैदिक वैज्ञानिक श्री शिवकर बापू तलपदे ने वेद विज्ञान के अनुसार सन् 1895 में मुम्बई की चौपटी पर विमान का अविष्कार कर दिखाया था। मरूतसखा नामन यह विमान 1500 फुट की ऊँचाई पर 17 मिनट तक उड़ता रहा था, महाराजा गायकवाड़ इसके साक्षी थे। अंग्रेजों ने छल करके श्री तलपदे जी से विमान का सूत्र (फार्मूला) ले लिया और स्वयं विमान के जनक बन गये। इसे भी इन्टरनेट पर देख सकते हैं। हमें पुनः वेद विज्ञान पर अनुसन्धान की आवश्यकता है। वेदों मेंसृष्टि विद्या, ब्रह्म विद्या, तार विद्या, आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्र पृथिवी आदि लोक लोकान्तर भ्रमण, आकर्षण, राजनीति आदि अनन्त विद्यायें वेदों में हैं। हमें फिर से गुरूकुलों में अनुसन्धान केन्द्रों की स्थापना करके वैदिक विद्याओं के प्रचार–प्रसार की आवश्यकता है। वैदिक विद्याओं के सम्बन्ध में ''नारद और सनत्कुमार संवाद'' के रूप में छान्दोग्य उपनिषद् में आख्यायिका है एक बार नारद जी सनत्कुमार के पास आत्म ज्ञान प्राप्त करने के लिए गये। नारद जी ने सनत्कुमार ने पूछा आपने अब तक जो कुछ पढ़ा है वह सब मुझे बताईये। तब नारद बोले –

सहो वाच ऋग्वेदं भगवो––सर्पदेवजनविद्यामेतद् भगवोऽध्येमि।

छा 0 7/1/2

अर्थ–''भगवान मैने चारो वेद शल्यक्रिया एवं अंगों के प्रत्यारोपण आदि पुराण (ब्राह्मण ग्रन्थ) पित्र्यविद्या–अर्थात् शुश्रशाविज्ञान (नर्सिंग) अर्थ शास्त्र, ईश्वर प्राप्ति

विज्ञान, भूतविद्या–प्राणी शास्त्र (बायोलॉजी) सर्पविद्या (विषैले प्राणियों की विद्या) राशि–गणित, आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान, उत्पात विज्ञान, भूचाल आदि तर्क शास्त्र, नीति शास्त्र, निरूक्त, धनुर्विद्या, नक्षत्र विद्या–ज्योतिष नृत्यगीत वाद्य शास्त्र इन सबको पढ़ा है किन्तु मैं आत्मा को नहीं जानता।''

आज समाज में एक भ्रम फैला है कि अंग्रेजी भाषा पढ़े बिना केवल वेद पढकर अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक नहीं बन सकते। किन्तु ध्यान रहे वेदों को पढ़कर ही समाज सेवी, चरित्रवान, डॉक्टर वैज्ञानिक, इंजीनियरों का निर्माण संभव है। हम भारतीय लोग आज वेदों से दूर भाग रहे हैं और विदेशी भाषा आदि का अनुकरण करके अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। जबकि विश्व में विकसित माने जाने वाले सभी देश विज्ञान पर और संस्कृत भाषा पर अनुसन्धान कर रहे हैं। आप इन्टरनेट पर ''नासा ऑन संस्कृत'' डाल कर देख सकते हैं। वैदिक गणित के सूत्र इतने सरल हैं जिनके माध्यम से आसानी से गणित के प्रश्नों को हल किया जा सकता है।

1–उदाहरण के लिए आपके सामने एक सूत्र प्रस्तुत करता हूँ वैदिक गणित का सूत्र है–

'' एकाधिकेन पूर्वेण '' पूर्व से एक अधिक के द्वारा अर्थात् कोई भी संख्या जिसका इकाई का अंक पाँच हो पहले अंक से एक अधिक के द्वारा वर्ग ज्ञात करें –

जैसे– 85, 8 दहाई 5 इकाई आठ से एक अधिक नौ, नौ और आठ की गुणा = 72 पाँच गुणा पाँच = 25 =7225 यह पचासी का वर्ग है।

2– उदाहरण – 25, 9 गुणा 10=90, 5 गुणा 5=25 यह पिचानवे का वर्ग है।

इस तरह हम वैदिक विधि से प्रत्येक क्षेत्र में हानि रहित सफलता प्राप्त कर सकते हैं। सभी से निवेदन है कि पूर्वाग्रह और आलस्य त्यागकर वेदों की ओर लौटें। यह वैदिक संस्कृति ही सनातन संसकृति है। भगवान श्री राम और भगवान श्री कृष्ण, हनुमान, गौतम, कणाद आदि सब इस वैदिक संस्कृति के ही समर्थक थे। ''महाजनोयेन गतः स पन्था'' जिस रास्ते पर हमारे महापुरूष चलें हो हमें भी उसी का अनुसरण करना चाहिए वेद ही सनातन धर्म के मूल हैं। इसी में सबकी उन्नति तथा सबका सुख है यही महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का सन्देश है।

नारियों के अधिकार व कर्त्तव्य

– आचार्या नन्दिता जी शास्त्री चतुर्वेदा
पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी

यत ते नाम सुहवं सुप्रणीतेनुमते अनुमतं सुदानु।
तेना नो यज्ञं पिपहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्।।

इस मन्त्र में पत्नी को अनुमति शब्द से सम्बोधित किया है। अनुमति से अच्छा नाम शायद सुमति हो सकता है परविश्वारा है। यसह सत्य है नारी जहां जिस भी क्षेत्र में होगी वहां दुःख, कष्ट, घरेलु छोटी–बड़ी समस्याएं तो रहेगी ही नहीं। अतः वह सबके द्वारा वरणीय है।

एक संबोधन अभी और शेष है मन्त्र में कहा **सुभगे**! सुभगा है। तेरा भग सुखदायी है, तू सौभाग्यवती है। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूं कि तू **सुवीरं रविं** – अच्छे वीर पराक्रम से युक्त पुत्र रूप धन का हमारे लिये **धेहि**– धारण कर, और उसका पोषण भी कर क्योंकि उत्तम सन्तान देकर अच्छो पालन पोषण के द्वारा सुसन्तान प्राप्ति की तू ही आधार है। वैदिक नारी अपने इस कर्तव्य का बोध अच्छी प्रकार करती थी, वह घर की व्यवस्था में गृह के संयोजन में तथा सन्तान के निर्माण में अपने अधिकार और दायित्व को समझती थी। इसीलिए वेद के शब्दों में वह अधिकारपूर्वक कहती थी।

अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद।
ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन।।

– अथर्व 9/39/4

इस घर के **अहं वदामि**– मैं बोलती हूं, मैं बोलूंगी **नेत् त्वं** – तू नहीं ! कभी नहीं। हॉ सभा में बाहर सोसायटी में तू बोल तुझे जितना बोलना हो। साथ ही वेद के शब्दों में वह आगे सचेत करते हुए कहते हैं – तू बाहर जा रहा है जा! लेकिन ध्यान रखना तू केवल मेरा ही है। बाहर किसी ओर की पराई स्त्री का कीर्तन भी मत करना, नाम भी मत लेना। इस प्रकार नारी तो स्वयं पतिव्रता होती ही है, उसे होना भी चाहिये पर पुरूष को भी छूट नहीं है, यह मन्त्र ने स्पष्ट कर दिया। पुरूष को भी एक पत्नीव्रत बनकर ही रहना है। किसी दूसरी स्त्री का नाम भी नहीं लेना है।

मन्त्र में नारी को सुभंगा शब्द से सम्बोधित किया है और समाज में विवाहित नारी को सौभाग्यवती भवः अखण्ड सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद दिया जाता है। इसीलिये पति के मर जाने पर सुहाग के सौभाग्य` विवाहिता के जो चिन्ह हैं बिन्दी, सिन्दूर और अन्य श्रृंगार आदि उनसे सदा के लिए उसे वंचित कर दिया जाता है। मानो पति ही उसका सौभाग्य था।

इस प्रकार नारी के लिये पत्नी के लिये प्रयुक्त अनुमति सुप्रणीति विश्वारा है। यह सत्य है नारी जहां जिस भी क्षेत्र में होगी वहां दुःख, कष्ट, घरेलु छोटी–बड़ी समस्याएं तो

रहेगी ही नहीं। अतः वह सबके द्वारा वरणीय है।

एक संबोधन अभी और शेष है मन्त्र में कहा **सुभगे**! सुभगा है। तेरा भग सुखदायी है, तू सौभाग्यवती है। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूं कि तू **सुवीरं रविं** – अच्छे वीर पराक्रम से युक्त पुत्र रूप धन का हमारे लिये **धेहि–** धारण कर, और उसका पोषण भी कर क्योंकि उत्तम सन्तान देकर अच्छो पालन पोषण के द्वारा सुसन्तान प्राप्ति की तू ही आधार है। वैदिक नारी अपने इस कर्तव्य का बोध अच्छी प्रकार करती थी, वह घर की व्यवस्था में गृह के संयोजन में तथा सन्तान के निर्माण में अपने अधिकार और दायित्व को समझती थी। इसीलिए वेद के शब्दों में वह अधिकारपूर्वक कहती थी।

अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद।
ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन।।

– अथर्व 9/39/4

इस घर के **अहं वदामि**– मैं बोलती हूं, मैं बोलूंगी **नेत् त्वं** – तू नहीं ! कभी नहीं। हॉ सभा में बाहर सोसायटी में तू बोल तुझे जितना बोलना हो। साथ ही वेद के शब्दों में वह आगे सचेत करते हुए कहते हैं – तू बाहर जा रहा है जा! लेकिन ध्यान रखना तू केवल मेरा ही है। बाहर किसी ओर की पराई स्त्री का कीर्तन भी मत करना, नाम भी मत लेना। इस प्रकार नारी तो स्वयं पतिव्रता होती ही है, उसे होना भी चाहिये पर पुरूष को भी छूट नहीं है, यह मन्त्र ने स्पष्ट कर दिया। पुरूष को भी एक पत्नीव्रत बनकर ही रहना है। किसी दूसरी स्त्री का नाम भी नहीं लेना है।

मन्त्र में नारी को सुभंगा शब्द से सम्बोधित किया है और समाज में विवाहित नारी को सौभाग्यवती भवः अखण्ड सौभाग्यवती भव का आशीर्वाद दिया जाता है। इसीलिये पति के मर जाने पर सुहाग के सौभाग्य` विवाहिता के जो चिन्ह हैं बिन्दी, सिन्दूर और अन्य श्रृंगार आदि उनसे सदा के लिए उसे वंचित कर दिया जाता है। मानो पति ही उसका सौभाग्य था।

इस प्रकार नारी के लिये पत्नी के लिये प्रयुक्त अनुमति सुप्रणीति विश्ववारा और सुभगा ये विशेषण वेदों में नारी कर्तव्य व अधिकार के व्यापक हैं। यज्ञ को पूर्ण करना व उसका पालन करने का दायित्व नारी पर है। यदि पुरूष समाज अपने अतिरिक्त बल के प्रयोग से इस वेदाज्ञा का उल्लंघन कर नारी के अधिकारों पर प्रहार करेगा तो समाज में अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार के साथ दुर्भिक्ष अकालमृत्यु और भय से युक्त दुर्दिन ही उसका परिणाम होगा। यह सुनिश्चित है। क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है –

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्य पूजा व्यक्तिकमः।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।

अनेक धार्मिक प्रवक्ता जिन्हें सनातन धर्म का ठीक से ज्ञान ही नही वे महिलाओं को वेद मंत्र बोलने से आपत्ति लेते हैं । आर्य समाज में रूढ़ी को तोडा उसका परिणाम है ऐसी बहनें वेदों की विदुषी है, विद्वान है ।

उन्नति के लिए आवश्यक चिन्तन

आत्मानं खलु उन्नेतुं, चतुर्ध चिन्तनं मतम्।

लक्ष्यः पन्थाश्च शैली च, साधनं कीदृशं मम।।2।।

भावार्थ –हम मनुष्यों को आवश्यक है कि – व्यक्तिगत उन्नति के लिये, पारिवारिक उन्नत के लिये, सामाजिक उन्नति के लिये या राष्ट्रीय उन्नति के लिये चार बातों पर आवश्यक ध्यान देवें –

(1) लक्ष्य : सर्वप्रथम हमारा लक्ष्य निर्धारित होना चाहिये, हम अपने लक्ष्य के प्रति आश्वस्त, दृढ़ तथा निःशंक होवें, हमारे जीवन में यदि हम मुख्य तथा गौण लक्ष्यों को बनाते हैं, तो हमारे सभी गौण कार्य भी मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होने चाहिये। चलते–फिरते, उठते–बैठते हमें सदा अपने लक्ष्य को स्मरण रखना चाहिये। जैसे – मेरा लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति है, मेरा लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है, अथवा मुझे हताश, निराश तथा दुःखी नहीं होना है।

(2) पन्थाः (मार्ग) : हमें अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उचित मार्ग का चयन करना चाहिये। मार्ग दो प्रकार के होते हैं – (1) श्रेयमार्ग (2) प्रेय मार्ग – हमें चिन्तन, मनन, निदिध्यासन करके निश्चित मार्ग का चयन करना चाहिये। ये दोनों मार्ग एक–दूसरे से विपरीत दिशा में जाने वाले होते हैं, अतः भिन्न–भिन्न लक्ष्यों तक पहुचाते हैं। अनेक व्यक्ति इस प्रकार कहते हैं ''मार्ग भिन्न भिन्न हैं किन्तु पहुंचाते एक ही जगह हैं'' यह धारणा ठीक नहीं है। प्रथम श्रेयमार्ग, प्रेयमार्ग की अपेक्षा कष्टप्रद, तपस्या से युक्त, थोड़ा विलम्ब से फल देने वाला हो सकता है, किन्तु कालान्तर में

अतुलनीय सुख–शान्ति–निर्भयता, उत्साह एवं आनन्द आदि गुणों को देने वाला होता है। जो कि हमें ईश्वरप्रापक तथा मोक्ष प्राप्ति में सहायक होता है।

किन्तु प्रेयमार्ग, श्रेयमार्ग की अपेक्षा भोग विलास के तथा क्षणिक सुख को देनेवाला अधिक साधनों से युक्त होता है। प्रेयमार्ग में क्षणिक अस्थायी सुख प्राप्त होता है, जो कि अन्त में निराशा, हताशा, क्षीणता तथा व्याधियों को जन्म देता है। प्रेयमार्ग के अस्थायी सुख से पूर्ण तृप्ति, पूर्ण आनन्द नहीं मिलता अपितु भोगों को भोगने की इच्छा बढ़ती ही जाती है। प्रेयमार्ग में प्राप्त होने वाले अस्थायी सुख के लिये हिंसा असत्यव्यवहार, द्वेष, द्रोह, चोरी आदि दोषों के होने की संभावना अपेक्षाकृत ज्यादा होती है।

(3) शैली : लक्ष्य प्राप्ति में हमारे कार्यों की शैली (तरीका, रीति) का भी बहुत अधिक महत्व होता है। अनेकों बार देखा जाता है – व्यक्ति श्रेष्ठ लक्ष्य बनाता है, श्रेष्ठ मार्ग का चयन करता है, साधन भी अच्छे होते हैं – किन्तु कार्य करने की शैली ठीक न होने के कारण बार–बार असफल होता ही रहता है – अतः हमें चिन्तन–मनन करके, अपने से अधिक अनुभवी व्यक्ति को पूछकर – ऐसी शैली को अपनाना चाहिये जिसमें – न्यून से न्यून समय, साधन तथा बल का व्यय होकर लक्ष्य प्राप्ति होती हो।

(4) साधन : लक्ष्य प्राप्ति के लिये हमारे पास समुचित मात्रा में अच्छे से अच्छे साधन होने चाहिये।

श्रेयमार्ग में चलने के लिए आवश्यकतानुसार अन्य लौकिक साधन तथा आध्यात्मिक उन्नति के लिये यम–नियम का पूर्ण पालन, चिन्तन, मनन, निदिध्यासन, स्वाध्याय, साधन, विवेक, वैराग्य, मौन, एकान्त सेवन आदि को प्राप्त करना चाहिये।

प्रेयमार्ग में चलने के लिये – पर्याप्त धन–सम्पत्ति, भवन, यातायात के साधन, भूमि, भृत्य आदि।

हमें उन्नति के लिए उपरोक्त चारों बिन्दुओं पर चिन्तन करना चाहिये।

सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें ?

वैचारिक क्रान्ति के लिए।

राजधर्म को जानने के लिए।

आश्रम व्यवस्था को समझने के लिए।

वदिक धर्म की पुनः स्थापना के लिए।

सन्तानों को सुशिक्षित करने के लिए।

भारतीय संस्कृति को समझने के लिए।

धर्म के सत्य स्वरूप को जानने के लिए।

बन्धन और मोक्ष विषय को जानने के लिए।

गृहस्थाश्रम के नियमों को समझने के लिए।

ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए।

युवकों में बढ़ती नास्तिकता को रोकने के लिए।

गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था की स्थापना के लिए।

जगत की उत्पत्ति–स्थिति–प्रलय को समझने के लिए।

विश्व में एक ही मानवधर्म को विस्तृत करने के लिए।

अन्धविश्वास और पाखण्ड़ों को चुनौति देने के लिए।

ईश्वर जीव और प्रकृति के भेद को समझने के लिए।

धार्मिक, आथिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के लिए।

ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना की उचित विधि को जानने के लिए। भारतवर्ष तथा देशान्तरों में फैले मत–मतान्तरों में सत्यासत्य का निर्णय करने के लिए।

साभार – श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक

कर्मफल सिद्धांत

– पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

जीव कठपुतली नहीं

उत्तर – यह ठीक नहीं। आप थोड़ा सा अपने जीवन पर विचार कीजिये। क्या कभी आपके मन में किसी काम के करने की भावना उठती है ? क्या कभी आप के हृदय में यह प्रश्न उठता है कि मैं अमुक काम करूॅं या न करूॅं ? और क्या आप परिणामों पर विचार करके बुद्धि से तोल कर यह निश्चित नहीं करते कि मैं ऐसा करूॅंगा, ऐसा न करूॅंगा ? यदि ऐसा करते हैं तो सिद्ध है कि आप कर्म करने में स्वतन्त्र हैं। आप के समक्ष एक ही मार्ग नहीं अनेक मार्ग हैं और उनमें से निर्वाचन करके केवल एक ही मार्ग को ग्रहण करते हैं और शेष को छोड़ देते हैं।

प्रश्न – आप तो स्वतन्त्रता और परतन्त्रता दोनों से चिपटे हुए हैं या तो यह मानिये कि संसार की समस्त चीजें किसी नियन्ता के वश में हैं, उनके विरूद्ध पत्ता भी नहीं हिल सकता या यह मानिये कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। दो परस्पर विरोधी बातैं कैसे ठीक हो सकती हैं ?

उत्तर – जिनको आप परस्पर विरोधी बातें कहते हैं वह परस्पर विरोधी हैं नहीं। केवल समझ का फेर है। मित्रता और विरोध के अर्थों में भेद है। पीलापन और लाली परस्पर विरूद्ध नहीं परन्तु अंधेरा और उजाला परस्पर विरूद्ध हैं। जहां और जब उजाला होगा अंधेरा न होगा। इसी प्रकार जीव की स्वतन्त्रता की सीमा है और ईश्वर के नियन्त्रण की भी सीमा है। जरा सा विचार कीजिये। आप बोलते हैं, आपकी जीभ आपके आधीन है, आप उस जीभ से शुभ और अशुभ दोनों बोल सकते हैं। कभी आजमा लीजिये। ईश्वर का जीभ पर इतना नियन्त्रण है कि आप उससे स्वतन्त्रता पूर्वक काम ले सकें। जीभ पर आपका तो कोई नियन्त्रण नहीं। आपने उसे बनाया नहीं न आपके हाथ में है कि उस जीभ में कोई दोष आ सकें। फिर भी वह आपकी जीभ है। आप उसको अपनी इच्छा के अनुसार प्रयुक्त कर सकते है। इससे स्पष्ट है कि आप किसी सीमा तक ईश्वर के नियन्त्रण में हैं और किसी सीमा तक स्वतन्त्र हैं। यह स्वतन्त्र्य आपकी स्वयं अनुभूति है, आपकी कल्पना नहीं। एक उदाहरण लीजिये, एक नदी है।

उस पर पुल बंधा हुआ है। उस पुल के दोनों तरफ आदमी के कद के बराबर ऊँची बाड़ लगी हुई है। आप चलने में स्वतन्त्र भी हैं और परतन्त्र भी। उन बाड़ों के बीच आप मजे से चल सकते हैं दौड़ सकते हैं परन्तु बाड़ों को पार नहीं कर सकते। जिसने पुल बनाया उसने आपको एक सीमा तक स्वतन्त्रता दी। उसके बाहर परतन्त्र कर दिया। यह सब आपकी भलाई को दृष्टिमें रख कर किया गया। इसी प्रकार नियन्ता ने भी सृष्टि की ऐसी व्यवस्था कर दी कि आपके स्वतन्त्र्य और परतन्त्र्य दोनों की सीमा बनी रहे। यह नियन्ता की बुद्धिमत्ता और कल्याण का सूचक है। आप सर्वथा परतन्त्र होते तो आपका विकास न होता। आपको अपनी बुद्धि के प्रयोग का कोई अवसर न मिलता ? **यदि आप सर्वथा स्वतन्त्र होते तो आप बुरा काम करके भी भला फल चाहते।** दूसरी बात यह है कि जीव एक नहीं है। सब को पूर्ण स्वतन्त्रता देना कल्पना मात्र है। एक की स्वतन्त्रता दूसरे की परतन्त्रता का कारण हो जाती है। **सड़क पर यदि सभी यात्री पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कर लें और उसका प्रयोग करने लगें तो एक गाड़ी, दूसरी गाड़ी से टकरा जाये, अतः स्वतन्त्रता की सीमा भी होती है।**

एक और उदाहरण लीजिये। परीक्षार्थी परीक्षा में बैठा हुआ है। प्रश्न–पत्र और उत्तर पत्र उसके हाथ में है। वह स्वतन्त्र है कि किसी प्रश्न का जो चाहे उत्तर दे परन्तु दूसरे परीक्षार्थी से बात नहीं कर सकता, स्वतन्त्र भी और परतन्त्र भी। स्वतन्त्र्य और परतन्त्र्य की सीमाएं हैं। ये दोनों बातें परीक्षार्थी के हित को दृष्टि में रख कर नियत की गई हैं। परीक्षार्थी जो लिखेगा उसका फल सीमा के भीतर है। आप क्या कहेगें। परीक्षार्थी पूर्णतया स्वतन्त्र है या पूर्णतया परतन्त्र ? दोनों में से एक भी नहीं। जब जीव अनेक हैं तो वे पूर्णतया स्वतन्त्र नहीं हो सकते। हॉ केवल एक दशा में हो सकते हैं। अर्थात् जब उन जीवों का विकास इतना उच्चतम हो जाये कि वह तन्त्र या नियम को स्वयं समझाने लगें और उनका उल्लंघन करें ही नहीं। यदि सब परीक्षार्थी अत्यन्त विश्वासपात्र हो जाएं तो निरीक्षकों की आवश्यकता न पड़े। यदि सभी जीव पूर्ण ज्ञानी या मुक्त हो जाऐ तो किसी को किसी से डर न रहे। यदि सभी नागरिक पूर्ण शिक्षित और विचारशील हो जाएं तो सड़कों की मोड़ों पर पुलिस के पहरे की आवश्यकता न हो। फिर तो सृष्टि की ही आवश्यकता न पड़े परन्तु जिस सृष्टि की हम विवेचना कर रहे हैं, उसमें अल्पज्ञ जीव हैं जो विकास के भिन्न–भिन्न स्तरों पर हैं, अतः उनकी स्वतत्रता और परतन्त्रता की भी सीमाएं हैं और वे सीमाएं कर्मवाद की पुष्टि करती हैं उनको काटती नहीं।

समाचार...

आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर के वार्षिक चुनाव संपन्न

आर्य समाज मल्हारगंज इन्दौर का वर्ष 2024–2025 का वार्षिक चुनाव दिनांक 30.06.24 दिन रविवार को साप्ताहिक सत्संगोपरान्त निर्विहन एवं सर्व सम्मति से सोहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल द्वारा नियुक्त पर्ववेक्षक डॉ श्री अखिलेश चन्द्र जी शर्मा की अध्यक्षता में 30.06.24 को सत्संग के पश्चात चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ हुई जिसमें सर्वसम्मति से प्रधान पद के रूप में डॉ. दक्षदेव जी गौड़ एवं डॉ. विनोद जी अहलुवालिया को मंत्री तथा श्री मुकेश जी गोपलानी को कोषाध्यक्ष के रूप में सभी सभासदों ने सर्वसम्मति एवं निर्विरोध रूप से चुना। तत्पश्चात सभा ने नव निर्वाचित प्रधान तथा मंत्री को यह सर्वाधिकार दिया कि वे स्वविवेक से अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी के शेष सदस्यों आदि का चयन करने को कहा तदानुसार उन्होंने निम्नाकिंत महानुभावों का चयन किया गया।

वरिष्ठ उपप्रधान श्री रमेश चन्द्र जी चौहान, उपप्रधान श्रीमती उर्मिला जी पंवार, उपमंत्री श्री उमेश जी गुप्ता, उपमंत्री श्रीमती शशि जी गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री मुकेश जी गोपलानी, पुस्तकाध्यक्ष श्री हरिसिंह जी, आर्य वीर दल अधिष्ठाता श्री स्नेहल जी शर्मा, अन्तरंग सदस्य श्री अजय जी रेनीवाल, श्रीमती मनोरमा जी आर्या, श्रीमती प्रतिभा जी यादव, श्रीमती पुष्पा जी गुप्ता, सभा प्रतिनिधि – डॉ दक्षदेव जी गौड़ एवं श्री रमेश चन्द्र जी चौहान इसके पश्चात चुनाव अधिकारी ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को आर्य समाज की पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। अन्त में नव निर्वाचित प्रधान डॉ. दक्षदेव जी गौड़ ने उपस्थित सभी सभासद एवं सदस्यों का आभार व्यक्त किया। शान्तीपाठ सभा समाप्त।

महर्षि दयानंद कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया को १० वी कक्षा की मान्यता प्राप्त

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान (मध्य प्रदेश शासन, स्कूल शिक्षा विभाग) **द्वारा** महर्षि दयानंद कन्या गुरूकुल को कक्षा 10 वीं की मान्यता प्राप्त हुई।

आर्य समाज पिपलानी के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज पिपलानी भेल भोपाल के वर्ष 2024/25 के चुनाव श्री धर्मवीर जी वाधवा के नेतृत्व में सम्पन्न हुए। सर्वसम्मति से श्री अतुल जी वर्मा पुनः प्रधान चुने गए। मंत्री पद पर श्री विवेक जी वाधवा एवं कोषाध्यक्ष फूलचंद जी गर्ग चुने गए। अन्य पदाधिकारी श्री नरेन्द्र जी आर्य (उपप्रधान), श्री रंजन जी द्विवेदी (उपमंत्री), श्री बाबूदास जी वैष्णव (पुस्तकाध्यक्ष), श्री वेदांश जी वर्मा (आर्य वीर दल अधिष्ठाता), सरोज जी वर्मा, मृदुला जी माथुर (प्रतिष्ठित सदस्य), श्री धुलीचंद जी गर्ग, श्री विनय कुमार तनेजा, श्री तिलकराज जी गुलयानी एवं श्री भानुप्रताप जी वर्मा अंतरंग सदस्य चुने गए।

आर्य समाज महू के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज महू के वर्ष 2024–25 के चुनाव निर्वाचन अधिकारी श्री राधेश्या मजी बियाणी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। सर्वसम्मति से पुनः श्री प्रकाश जी आर्य प्रधान चुने गए। उपप्रधान श्री आर्य ओमप्रकाश जी पाटीदार, मंत्री श्री श्रीधर जी गोस्वामी उपमंत्री श्री द्रोणाचार्य जी दुबे एवं सुश्री सुनीति जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री राजेश जी नैनावा, पुस्तकाध्यक्ष श्री दिलीप सिंह जी, प्रान्तीय सभा प्रतिनिधि हेतु श्री राधेश्याम जी बियाणी एवं श्री रामलाल जी प्रजापती, अन्तरंग सदस्य श्री आर्य डॉ रामलाल जी प्रजापती एवं सुश्री उषा किरण जी त्रिपाठी चुने गए।

आर्य समाज महर्षि दयानंदगंज इन्दौर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानंदगंज इन्दौर वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें सर्वानुमति से प्रधान श्री हरिश जी शर्मा, उपप्रधान श्री कैप्टन सहदेव आर्य, श्रीमती निर्मला जी शर्मा, मंत्री श्री रूपनारायण जी मालवीय उपमंत्री श्रीमती सविता जी शर्मा, श्री यशवंत सिंह जी

परमार, कोषाध्यक्ष श्री पीयूष जी शुक्ला, आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री रामचंद्र आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री सचिन जी अग्रवाल, अंतरंग सदस्य मेजर ऋषि जी तिवारी, श्री सुरेश जी साहू, श्री शंभू त्रिवेदी सर्वसम्मति से चुने गए।

इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सभासद एवं साधारण सदस्य उपस्थिति थे। निर्वाचन कार्यक्रम रिटायर्ड आर्मी ऑफिसर श्री श्रीधर जी गोस्वामी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। निर्वाचन के पश्चात सभी कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे को बधाई दी तथा प्रत्येक ने पांच पांच पौधा रोपण करने का संकल्प लिया।

आर्य समाज कोदरिया महू की नवीन कार्यकारिणी का गठन हुआ

आर्य समाज कोदरिया की नवीन कार्यकारिणी का गठन मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रकाश जी आर्य की अध्यक्षता में संपन्न हुए। जिसमें सर्वसम्मति से श्री जयसिंह जी पंवार प्रधान श्री जनार्दन सिंह उपप्रधान, श्री अजय जी गोयल मंत्री, श्री विश्वनाथ जी मेहतों कोषाध्यक्ष चुने गए। श्री मिश्रीलाल जी पाटीदार, श्री प्रकाश जी सेन, श्री तेजसिंह जी आर्य, श्रीमती आरती जी शर्मा, श्री विरेन्द्र जी शर्मा अंतरंग सदस्य चुने गए।

आर्य समाज उज्जैन के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज उज्जैन के वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न जिसमें सर्वसम्मति से श्री सुरेश जी पाटीदार प्रधान, श्री राजेन्द्र जी शर्मा उपप्रधान, श्री ओमप्रकाश जी यादव उपप्रधान, श्री नवनीत जी सिकरवार मंत्री, डॉ प्रदीप जी चतुर्वेदी उपमंत्री, श्री ललित जी नागर उपमंत्री, श्री अम्बाराम जी कोषाध्यक्ष, श्री मदनलाल जी कुमावत पुस्तकाध्यक्ष, श्री रमेश जी पाटीदार आर्यवीर दल अधिष्ठाता, श्री वेदप्रकाश जी आर्य अंतरंग सदस्य चुने गए।

गौशाला का लोकार्पण

गुरुकुल में नवनिर्मित गौशाला का लोकार्पण किया गया।

आर्य समाज महवीर नगर भोपाल के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज महावीर नगर भोपाल के वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न जिसमें सर्वसम्मति से श्री वेद प्रकाश जी शर्मा प्रधान, श्रीमतीतपेश्वरी जी शर्मा उपप्रधान, श्री सुधाकर जी अग्रवाल उपप्रधान, श्री प्रकाश चन्द्र जी सोनी मंत्री, श्रीमती राकेश जी सोनी उपमंत्री, श्रीमती सरोजलता जी सोनी उपमंत्री, श्री महेश जी शर्मा कोषाध्यक्ष, श्री गिरिराज शर्मा पुस्तकाध्यक्ष, श्री ओम नरदेव जी आर्य अंतरंग सदस्य, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा प्रतिनिधि श्रीमती पुष्पाजलि जी शर्मा चुने गए।

आर्य समाज महर्षि दयानंद मार्ग रतलाम के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज महर्षि दयानंद मार्ग रतलाम के वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न जिसमें सर्वसम्मति से श्री राजेन्द्र बाबू जी गुप्ता प्रधान, श्रीमती ज्योति पांचाल उपप्रधान, श्री सुभाष जी सोनी मंत्री, श्री अंकित रोधववाल उपमंत्री, श्री प्रकाश जी अग्रवाल कोषाध्यक्ष, श्रीमती शोभा जी पांचाल पुस्तकाध्यक्ष, श्री सतीश दय्या अंतरंग सदस्य, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा प्रतिनिधि श्री प्रकाश जी अग्रवालचुने गए। चुनाव श्री लल्लन सिंह जी ठाकुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए।

प्रान्तीय सभा द्वारा वेद प्रचार

प्रान्तीय सभा द्वारा इन्दौर, उज्जैन, भोपाल, संभाग में दिनांक 2 से 18 अगस्त तक वेद प्रचार का आयोजन विभिन्न स्थानों पर किया गया हैं। इस हेतु उत्तर प्रदेश से आचार्य विरेन्द्र जी शास्त्री को आमन्त्रित किया गया हैं। साथ में सभा उपदेशक आचार्य विश्वामित्र जी एवं श्री दिलिप आर्य सभा वाहन के साथ रहेगें।

अन्य संभागों में भी इसी प्रकार पुनः प्रचार कार्य किया जावेगा।

विनम्र आग्रह

कृपया गुरुकुल की अन्नपूर्णा योजना के सदस्य बनें

परमात्मा की कृपा से सत्य सनातन धर्म की शिक्षा के प्रचार प्रसार का एक केन्द्र महर्षि दयानन्द कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया भी हैं। वर्तमान सत्र में लगभग 80 से 85 कन्यायें शिक्षा प्राप्त करेगी। गुरूकुल में कन्याओं की स्थायी भोजन व्यवस्था के लिए एक योजना चल रही हैं । इस योजना हेतु रूपये 11000/— की राशि एक बार दान स्वरूप भेंट की जाती हैं। दानदाता की यह राशि बैंक में उनके नाम से स्थायी जमा (फिक्स डिपाजिट) करदी जाती हैं। ऐसी जमा राशि के ब्याज से कन्याओं के भोजन की व्यवस्था हो यह प्रयास हैं। अभी 200 से अधिक दानी महानुभावों ने अपना सात्विक योगदान प्रदान कर दिया हैं।

धर्मप्रेमी महानुभावों, माताओं बहनों से अनुरोध है कृपया आप भी इस पवित्र कार्य में सहयोगी बनें।

विशेष—गुरूकुल को देय राशि आयकर विभाग से कर मुक्त सुविधा प्राप्त हैं।

यदि राशि सीधे बैंक में जमा करवावें तो हमें निम्नलिखित नंबरो पर सूचित करें या गुरुकुल का बारकोड स्केन कर सीधे ऑनलाईन राशि बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कर हमें अवश्य सूचित करें ।

बारकोड

कृपया इन नंबरो पर सूचित करें ।

98266 55117
62611 86451
78289 66977
98936 05244

अन्नपूर्णा योजना के सहयोगी महानुभाव

क्रं.	नाम	राशि
186	श्री विनोद जी श्रीमती गीता जी अहलुवालिया इन्दौर	11000/—
187	श्री मोहनलाल जी संगीता जी आर्या खाचरोद	11000/—
188	प्रतिभा जी डॉ ओमप्रकाश जी यादव इन्दौर	11000/—
189	श्री धर्मदेव शास्त्री जी शाजापुर	11000/—
190	श्रीमती हंसा पति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी	11000/—
191	डॉ. सुरेन्द्रजी शर्मा, गुना	11000/—

क्रमशः........

सभी दानदाता सहयोगीयों को गुरूकुल परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद